जीवन- दर्शन

कवि परिचय :

रामेश्वर शुक्ल अंचल

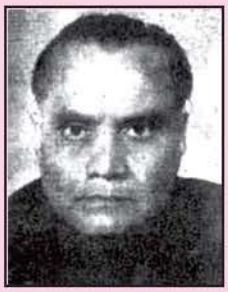

रामेश्वर शुक्ल अंचल जीवन की समग्र अनुभूतियों के कवि हैं। वे जीवन में प्रेम और प्रसन्नता के साथ उत्साह और उल्लास के कवि हैं।

अंचल जी का जन्म सन् 1915 में हुआ था। आप अनेक शासकीय महाविद्यालयों में प्राध्यापक एवं प्राचार्य के पद पर रहे। जीवन के अंतिम समय में मध्यप्रदेश के जबलपुर को अपना निवास स्थान बनाया।

आपकी कविताओं में प्रेमानुभूति का सूक्ष्म अंकन हुआ है। उसमें पिपासाकुल प्राणों की सारी कसक, सारी वेदना अभिव्यक्त हुई है। उनके काव्य में स्वच्छंदतावादी दृष्टिकोण के साथ-साथ राष्ट्रीय ओज का भी सुन्दर मिश्रण है।

मधुलिका, अपराजिता, किरण बेला, करील, लाल-चूनर, वर्णान्त के बादल आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। समाज और साहित्य में आपके निबन्ध विचारोत्तेजक बन पड़े हैं।

जीवन प्रेरणा, संघर्षशीलता व विपरीत परिस्थितियों में जीने की कला देने वाले शुक्लजी सदैव स्मरणीय हैं।

जीवन, भावनाओं और संवेदनाओं से प्रसारित होता है जबकि विचार, जीवन में मार्ग चयन का आधार निर्मित करते हैं। भाव और विचार मिलकर ही जीवन मूल्यों की रचना करते हैं। व्यक्ति और समाज के बीच जीवन मूल्य संतुलन स्थापित करते हैं और व्यक्ति तथा समाज की समुन्नति में सहायक होते हैं। दया, करुणा, क्षमा जैसे गुणों से मानवता का विस्तार होता है। साहस, शक्ति और शील जैसे गुणों से व्यक्ति चेतना का विकास होता है। कविता में भाव और विचार का यही स्वरूप अभिव्यक्ति पाता है।

'काँटे कम से कम मत बोओ' कविता में कवि ने मानवीय चेतना के उदात्त पक्ष को प्रस्तुत कर मनुष्य की असीमित शक्तियों का उल्लेख किया है। वे मानते हैं कि जीवन में संकट और पराजय से भरे क्षण भी आते हैं, किन्तु इनसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। मनुष्य को अपनी जीवन शैली इस तरह से विकसित करना चाहिए कि अपने जीवन में वह खुशियाँ भरता रहे। जीवन में जो संघर्ष करता है, वही जीवन की प्रसन्नता का वरण भी करता है। सदैव उद्यमशील बनकर अपने जीवन को जागृत करने वाले ही सच्चे साहसी और वीरव्रती कहलाते हैं। विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए कविता आन्तरिक शक्ति देने वाली है।

जगदीश गुप्त ने 'सच है महज संघर्ष ही' कविता में संघर्ष को जीवन का पर्याय मानते हुये स्पष्ट किया है कि संघर्ष ही जीवन में सत्य का बोध कराता है। जीवन सत्य को पाने के लिये आत्मालोचन भी आवश्यक है, विपरीत से विपरीत परिवेश में अपने आपसे संघर्ष करने वाला व्यक्ति कभी निराश नहीं होता, कभी पराजित नहीं होता है। यह संघर्ष भावना ही व्यक्ति के भीतर अपने जीवन के प्रति आस्था और विकास जागृत करती है। संघर्ष ही हमारी चेतना का विस्तार करता है। चेतना का विस्तार ही दुख से मुक्ति का आधार है। संघर्ष में व्यक्ति निरंतर अकेला होता जाता है किंतु इस अकेलेपन से ही वह साहसी बन जाता है। यह जीवन वृत्ति ही व्यक्ति को आंतरिक शक्ति से समन्वित कराती है।

काँटे कम से कम मत बोओ

यदि फूल नहीं बो सकते तो
काँटे कम से कम मत बोओ!

(1)

है अगम चेतना की घाटी, कमजोर बड़ा मानव का मन;
ममता की शीतल छाया में होता, कटुता का स्वयं शमन!
ज्वालाएँ जब घुल जाती हैं, खुल-खुल जाते हैं मुँदे नयन,
होकर निर्मलता में प्रशान्त बहता प्राणों का क्षुब्ध पवन!
संकट में यदि मुस्का न सको, भय से कातर हो मत रोओ!
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम से कम मत बोओ!

(2)

हर सपने पर विश्वास करो, लो लगा चाँदनी का चन्दन,
मत याद करो, मत सोचो - ज्वाला में कैसे बीता जीवन,
इस दुनिया की है रीति यही - सहता है तन, बहता है मन;
सुख की अभिमानी मदिरा में, जो जाग सका, वह है चेतन!
इसमें तुम जाग नहीं सकते, तो सेज बिछाकर मत सोओ!
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम से कम मत बोओ!

(3)

पग-पग पर शोर मचाने से मन में संकल्प नहीं जमता,
अनसुना - अचीन्हा, करने से संकट का वेग नहीं कमता,
संशय के सूक्ष्म कुहासे में विश्वास नहीं क्षण - भर रमता,
बादल के घेरों में भी तो जय-घोष न मारुत का थमता।
यदि बढ़ न सको विश्वासों पर, साँसों से मुरदे मत ढोओ;
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम से कम मत बोओ!

सच है महज संघर्ष ही

कवि परिचय :

जगदीश गुप्त

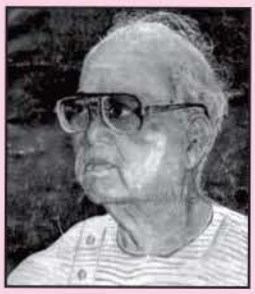

नयी कविता के प्रमुख कवि जगदीश गुप्त का जन्म सन् 1924 ई० में उत्तर प्रदेश के जिला हरदोई के शाहाबाद नामक कस्बे में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा शाहाबाद में हुई थी। एम.ए., पी-एच.डी. करने के बाद ये अध्यापन करते रहे। इन्होंने विश्व विद्यालय अनुदान आयोग में उच्च शोध की विशेष योजना में भी कार्य किया था। इन्होंने नई कविता का सम्पादन भी किया। सन् 2001 ई० में इनका देहावसान हो गया था।

जगदीश गुप्त की प्रमुख रचनाएँ- नाव के पाँव, शब्द दंश, हिम बद्ध, शम्बूक आदि है। इन्होंने 'नयी कविता स्वरूप और समस्याएँ' नामक समीक्षात्मक ग्रन्थ भी लिखा था।

जगदीश गुप्त का नाम नयी कविता के कवियों में प्रमुखता से लिया जाता है। इन्होंने 'नयी कविता' पत्रिका के प्रकाशन द्वारा कविताओं में जीवन की विभिन्न विसंगतियों के चित्रण के साथ-साथ प्रकृति एवं मानवीय सौन्दर्य के विभिन्न पक्षों का आकर्षक वर्णन एवं मानवीय करुणा, समता और नैतिक आदर्शों की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति की है। इनकी काव्य भाषा, सहज, सरल, प्रभावपूर्ण प्रतीकात्मक, लाक्षणिक तथा भावानुरूप है। इन्होंने मुख्य रूप से मुक्त छन्द में काव्य रचना की है। इन्होंने मुक्तक कविताओं के अतिरिक्त लघुकाव्य 'शम्बूक' की रचना की है। नवीन उपमानों तथा विभिन्न अलंकारों की छटा इनके काव्य में सर्वत्र दिखाई देती है।

सच हम नहीं, सच तुम नहीं
सच है, महज संघर्ष ही
संघर्ष से हट कर जिए तो क्या जिए हम या कि तुम।
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झरकर कुसुम।
जो लक्ष्य भूल रुका नहीं।
जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी ही रही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
ऐसा करो जिससे न प्राणों में कहीं जड़ता रहे।
जो हैं जहाँ चुपचाप अपने-आप से लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिलें।
काँटे चुभें, कलियाँ खिलें।
हारे नहीं इंसान, है संदेश जीवन का यही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
हमने रचा आओ हमी अब तोड़ दे इस प्यार को।
यह क्या मिलन, मिलन वही जो मोड़ दे मँझधार को।
जो साथ फूलों के चले।
जो ढाल पाते ही ढले।
वह जिंदगी क्या जिंदगी जो सिर्फ पानी-सी बही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
संसार सारा आदमी की चाल देख हुआ चकित।
पर झाँक कर देखो दृगों में, हैं सभी प्यासे थकित।
जब तक बंधी है चेतना।
जब तक हृदय दुख से घना।
तब तक न मानूँगा कभी इस राह को ही मैं सही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
अपने हृदय का सत्य अपने-आप हमको खोजना।
अपने नयन का नीर अपने आप हमको पोंछना।
आकाश सुख देगा नहीं।
धरती पसीजी है कहीं?
जिससे हृदय को बल मिले हैं ध्येय अपना तो वही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
सच है महज संघर्ष ही।

अभ्यास

बोध प्रश्न

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) ''काँटे कम से कम मत बोओ!'' का क्या आशय है ?

(2) भय से कातर होने पर मनुष्य की स्थिति कैसी हो जाती है?

(3) जीवन का सच क्या है?

(4) जीवन मार्ग में काँटे और कलियाँ क्या हैं?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) कवि अंचलजी के अनुसार दुनिया की रीति क्या है?

(2) ''संकट में यदि मुस्का न सके, भय से कातर हो मत रोओ।'' पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता है ?

(3) गुप्त जी ने जीवन का संदेश किसे माना है और क्यों?

(4) गुप्तजी ने अपने हृदय को सशक्त बनाने के लिए क्या मार्ग सुझाया है?

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) ''काँटे कम से कम मत बोओ!'' – कविता की केन्द्रीय भावना लिखिए।

(2) वह ज़िन्दगी क्या ज़िन्दगी जो सिर्फ पानी सी बही – कथन को स्पष्ट कीजिए।

(3) निम्नलिखित काव्यांश का भावार्थ स्पष्ट कीजिए-

अ. **यदि बढ़ न सको विश्वासों पर साँसों के मुरदे मत ढोओ।**
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम से कम मत बोओ!

आ. **है अगम चेतना की घाटी, कमजोर बड़ा मानव का मन;**
ममता की शीतल छाया में होता, कटुता का स्वयं शमन!

इ. **सच हम नहीं सच तुम नहीं।**
अपने हृदय का सत्य अपने आप हमको खोजना
अपने नयन का नीर अपने आप हमको पोंछना।

काव्य सौन्दर्य

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

   हार, बड़ा, विश्वास, अपना

2. वर्तनी सुधारिए –

   निरमल, घाटि, विसवास, मरत, कलीयां

3. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए-

क. ''मत याद करो, मत सोचो - ज्वाला में कैसे बीता जीवन।''

ख. यदि बढ़ न सको विश्वासों पर, साँसों से मुरदे मत ढोओ;

ग. जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झरकर कुसुम

5. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचान कर लिखिए-

क. अनसुना, अचीन्हा, करने से संकट का वेग नहीं कमता।

ख. जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झरकर कुसुम

ग. वह जिन्दगी क्या जिन्दगी जो सिर्फ पानी-सी बही।

योग्यता विस्तार

1. यदि आपके जीवन में कभी विपरीत परिस्थितियाँ आ जाएँ, तो आप क्या करोगे? अपने विचार लिखकर कक्षा में सुनाइए।

2. अपने आस-पास के किसी संघर्षशील बालक के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए और यह भी जानिए कि उसने किस प्रकार उन्नति की है?

3. संघर्ष करने की प्रेरणा देने वाली कविताओं का संकलन कर फाइल बनाइए।

4. **''कौन कहता है कि आसमां में सुराख हो नहीं सकता।**
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो।''

दुष्यंत कुमार की इन पंक्तियों के आधार पर 'जीवन-दर्शन' पर कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

शब्दार्थ

अगम - जहाँ पहुँचा न जा सके,
शमन - शान्त करना
मुँदे - ढँके
प्रशांत - शांत किया हुआ, सधाया हुआ
क्षुब्ध - दुखी
रीति - शैली, परम्परा
अचीन्हा - पहचान हीन
संशय - संदेह
मारुत - हवा
कातर - व्यथित

* * *